Contents

# अनुक्रमणिका


अध्याय :[1] परिवार और विघटन की स्थितियाँ

(1) परिवार - अर्थ और परिभाषा
पाश्चात्य अवधारणा
भारतीय अवधारणा

(2) परिवार : विविध संदर्भ - कर्ता, स्त्रियों की स्थिति, पारस्परिक प्रेम, उत्तरदायित्व की भावना, अधिकार और कर्तव्य, माता-पिता, पति-पत्नी, बच्चे तथा अन्य रिश्तेदार, अनुशासन और मर्यादा, पारिवारिक गौरव, पारिवारिक आचार-संहिता और रीति-नीति, अतिथि सत्कार।

(3) परम्परागत भारतीय परिवार की विशेषताएँ।

(4) परिवार के कार्य - जैविक कार्य, वंशानुक्रम से जुडे कार्य, अनुशासनात्मक एवं शिष्टाचारपूर्ण स्थायी यौन तुष्टि, प्रजनन और संतान का पालन-पोषण, संवेगात्मक संतुष्टि, शारीरिक कार्य, राजनीतिक कार्य, धार्मिक कार्य, आर्थिक कार्य, शैक्षणिक कार्य, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्य, मनोरजन संबंधी कार्य।

(5) परिवार के विभिन्न संयोजन एव विघटनकारी घटक

(6) संयोजन का मुख्य आधार आर्थिक सौरस्य एवं नैतिकता

(7) परिवर्तनशील स्थिति में पारिवारिक बदलाव

अध्याय :[2] **(1) साठोत्तरी हिन्दी कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर।**

**(2) साठोत्तरी गुजराती कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर।**

अध्याय :[3] **परिवार के परम्परागत स्वरूप में परिवर्तन के फलस्वरूप पारिवारिक विघटन की स्थितियाँ - हिन्दी - गुजराती कहानी के संदर्भ।**

(1) आर्थिक कार्यों में परिवर्तन

(2) धार्मिक कार्यो में परिवर्तन

(3) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यो में परिवर्तन

(4) मनोरंजन सम्बन्धी कार्यो में परिवर्तन

अध्याय :[4] **व्यक्ति के मानसिक तनाव से उद्‌भूत पारिवारिक विघटन की स्थितियाँ – हिन्दी–गुजराती कहानी के संदर्भ।**

अध्याय :[5] सामाजिक मान्यताओं के उल्लंघन से उद्‌भूत पारिवारिक विघटन की स्थितियाँ – हिन्दी–गुजराती कहानी के संदर्भ।

अध्याय :[6] आर्थिक तनाव से उद्‌भूत पारिवारिक विघटन की स्थितियाँ – हिन्दी–गुजराती कहानियों के संदर्भ ।

अध्याय :[7] व्यावसायिक तनाव से उद्‌भूत पारिवारिक विघटन की स्थितियाँ – हिन्दी – गुजराती कहानियों के संदर्भ।

अध्याय :[8] **बदलते पारिवारिक सम्बन्धों के कारण हुए विघटन का साठोत्तरी कहानी के शिल्प पर प्रभाव ।**

– शिल्प सम्बन्धी परम्परागत मान्यताओं में बदलाव, बदलते पारिवारिक सम्बन्धों का शिल्प पर प्रभाव, कथानक का विघटन, कथानक की सूक्ष्मता, कथाह्रास का विश्रृंखलित शिल्प, मनःस्थितियों का चित्रण, माता-पिता और संतान के सम्बन्ध-विश्लेषण का शिल्प, परम्परागत शिल्प में मूल्य विषयक मान्यताएँ, सांकेतिकता, भाषा का खुलापन, मूल्य परिवर्तन के प्रेरक तत्वों से हिन्दी कहानी में परिवर्तित मानवीय सम्बन्धों के खोखलेपन की तीव्र अनुभूति की अभिव्यक्ति, सार्थकता और सफलता।

उपसंहार